जी डी गोयनका पब्लिक स्कूल

कक्षा:नौवी (9th) **विषय:हिंदी** **प्रसंग: तुम कब जाओगे, अतिथि**

लेखक शरद जोशी जी

पाठ्य-पुस्तक: **स्पर्श (भाग-2)**

जीवन मूल्य: **शहरी जीवन-जगत की जानकारी देना।**
मनुष्यों के स्वभाव से परिचित कराना।
सामाजिकता का पाठ पढ़ाना।
नैतिक मूल्यों की ओर प्रेरित करना।

लेखक परिचय :-- शरद जोशी का जन्म मध्यप्रदेश के उज्जैन शहर में २१ मई , १९३१ को हुआ। उन्होंने व्यंग्य लेख , व्यंग्य उपन्यास , व्यंग्य कॉलम के अतिरिक्त हास्य-व्यंग्यपूर्ण धारावाहिकों की पटकथाएँ और संवाद भी लिखे। उनकी प्रमुख व्यंग्य कृतियाँ हैं - परिक्रमा , किसी महाने , जीप पर सवार इल्लियाँ , तिलस्म , रहा किनारे बैठ , दूसरी सतह , प्रतिदिन। दो व्यंग्य नाटक हैं - अंधों का हाथी और एक था गधा। एक उपन्यास है मैं,मैं,केवल मैं, उर्फ़ कमलमुख बी.ए.। उनकी भाषा अत्यंत सरल और सहज है। धर्म , अध्यात्म , राजनीति , सामाजिक जीवन , व्यक्तिगत आचरण , कुछ भी उनकी पैनी नज़रों से नहीं बच सका है। इम्होंने अपनी व्यंग्य-रचनाओं में समाज में पाई जाने वाली सभी विसंगतियों का बेबाक चित्रण किया है। पाठक इस चित्रण को पढ़कर चकित भी होता है और बहुत कुछ सोचने को विवश भी।

<u>लेख का सारांश</u> :- लेखक कहता है कि हे अतिथि ! तुम्हें देखते ही मेरा बटुआ काँप गया था। फिर भी हमने भरसक मुस्कान के साथ तुम्हारा स्वागत किया था। रात के भोजन को मध्यम- वर्गीय डिनर जैसा भारी-भरकम बना दिया था। सोचा था कि तुम सुबह चले जाओगे। पर ऐसा नहीं हुआ। तुम यहाँ आराम से सिगरेट के छल्ले उड़ा रहे हो।उधर मैं तुम्हारे सामने कैलेण्डर की तारीखें बदल-बदलकर तुम्हें जाने का संकेत दे रहा हूँ।तीसरे दिन तुमने कपड़े धुलवाने की फ़रमाइश की। कपड़े धुलकर आ गए लेकिन तुम नहीं गए। पत्नी ने सुना तो वह भी आँखें तरेरने लगी। चौथे दिन कपड़े धुलकर आ गए , फिर भी तुम डटे हुए हो। बातचीत के सभी विषय समाप्त हो गए हैं। दोनों अपने अपने में मग्न होकर पढ़ रहे हैं\ सौहार्द समाप्त हो चला है। भावनाएँ गालियाँ बनती जा रही हैं। पत्नी ने बोर होकर कहा कि आज मैं खिचड़ी ही बनाऊँगी। घर को स्वीट होम कहा गया है , पर तुम्हारे होने से घर का स्वीटनेस खत्म हो गया है। अब तुम चले जाओ वर्ना मुझे ' गेट आउट ' कहना पड़ेगा।यदि तुम अपने आप कल सुबह चले न गए तो मेरी सहनशीलता जवाब दे जाएगी। माना तुम देवता हो किंतु मैं तो आदमी हूँ। मनुष्य और देवता ज़्यादा देर साथ नहीं रह सकते। इसलिए अपना देवत्व सुरक्षित रखना चाहते हो तो अपने आप विदा हो जाओ। तुम कब जाओगे , अतिथि ?

⇨ **नोट- यह कार्य आप अपनी लिखित पुस्तिका (Notebook) पर लिखिए और अच्छी तरह से याद करिए।**